भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 35 अंक : 6 | 6.12.2012 गुरुवार (नवंबर - दिसंबर) | शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

बड़े घर दिवाली शिविर – 2012

हर साल की तरह इस बार भी सभी मुक्त, विशेष रूप से बच्चे, **'बड़े घर दीवाली शिविर'** में दिल्ली आने के लिए अत्यधिक उत्साहित थे; क्योंकि प.पू. गुरुजी उन्हें आनंद करवाने का ख्याल रखते हुए, पहले से ही आतिशबाजियाँ इत्यादि मँगवा कर रखते हैं। सभी ने तीन महीने पहले से ही प्लेन व रेलवे की टिकिट्स बुक करवा ली थीं। करोड़ों धन्यवाद प.पू. गुरुजी की करुणा-वात्सल्यता और कल्पना से परे भक्तिपूर्ण आत्मीयता को! सच कहें तो प्रगट के उपासकों के लिए तो अपने प्रगट स्वरूप की हाज़िरी में ऐसे त्यौहार-मंगल अवसर मनाना भी जीवन का एक धन्य मौका है।

अमदावाद-मुंबई के मुक्तों के आगमन के बाद प्रति वर्ष की भाँति **धनत्रयोदशी – 11 नवंबर, 2012** की मंगल सुबह करीब 10:00 बजे 'कल्पवृक्ष' हॉल में श्री ठाकुरजी के समक्ष प.पू. गुरुजी की निश्रा में पू. यज्ञप्रियस्वामी ने महापूजा की। सायं करीब पौने सात बजे मुंबई के **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** व अमदावाद के **प.भ. परिमलभाई** एवं दिल्ली के **प.भ. राकेशभाई** – इन तीनों ने मिलकर दीप प्रज्ज्वलित करके 'बड़े घर दिवाली शिविर' का उद्घाटन किया।

'योगीगीता' में ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा दिए गए मुद्दों का **प.पू. महंतस्वामिजी** ने खूब गहनता से निरुपण किया है। थोड़े ही समय पहले प.पू. गुरुजी ने कहीं पधरामनी पर जाते हुए गाड़ी में वह ऑडियो सी.डी. सुनी। साधना मार्ग के पथिकों के लिए उन्हें वह बहुत उपयोगी लगा। अतः हाल ही में 14 से 19 अक्तुबर प.पू. गुरुजी जब संतों, सेवकों, बहनों एवं कुछ गृहस्थों को मसूरी 'आनंदोब्रह्म शिविर' में लेकर गए, तब वहाँ रोज सायं सभा में प.पू. महंतस्वामिजी की इस परावाणी का लाभ लिया। सो, अबकी बार 'बड़े घर दिवाली शिविर' में भी उनकी परावाणी का लाभ लेते हुए साधना के सार समान एक विशिष्ट सूत्र सभी ने पाया और वह था –

सहनशक्ति 'जबरदस्त' गुण है!

और... प.पू. गुरुजी भी अकसर इसी बात पर जोर देते हैं कि सरलता और सहनशक्ति इन दोनों के द्वारा सभी कल्याणकारी गुण हम में आ जाते हैं। परंतु, जन्मों से चिपके जड़ स्वभावों के वश हम अपने सत्पुरुष की दिली इच्छा पर खरे नहीं उतर पाते।

पर, जब हमें गुणातीत विभूति का संबंध हुआ है, तो वे कैसे भी हमारी चेतना की पूर्णाहुति करवा ही देंगे। अंतर से ऐसी प्रार्थना के साथ **13 नवंबर-दीवाली, 14 नवंबर-अन्नकूटोत्सव, 15 नवंबर-भैयादूज** मनाते हुए **18 नवंबर-लाभपंचमी** के मंगलकारी दिन गुजरात एपार्टमेन्ट्स में शिविर का समापन हुआ और मुंबई-अमदावाद से पधारे मुक्तों ने अगले दिन भावभीनी आँखों से विदाई ली…

(‘बड़े घर दीवाली शिविर’ में प.पू. गुरुजी द्वारा दी गई मार्मिक सूझ के रहस्यरूपी सूत्रों से सभी मुक्त ‘भगवत् कृपा’ के अगले अंक से लाभान्वित हो पाएंगे।)

✡✡✡

अन्नकूट कृपाप्रसाद

…आज मुझे जो बातें – खास तौर पर आशीष के बारे में – करनी थी, वो सब अंकल ने कह दीं; तब मुझे एक सेन्टेन्स याद आया। उससे पहले एक बात करता हूँ – जो मसूरी आए थे, उन्हें तो पता होगा, क्योंकि उन्होंने वो बात सुनी थी। मसूरी की शिविर के बारे में तो कोई शब्द ही नहीं हैं। हमारे **महेशजी** कहते हैं – ***जो मसूरी नहीं आए, वे रह गए और जो मसूरी आए वे बह गए।*** और… इस बात की कन्फर्मेशन **गर्ग साहेब** ने कल कर भी दी थी कि *‘गुरुजी यह बात एकदम सही थी। इसमें कुछ भी एक्ज़ागरेटेड या वाणी लालित्य नहीं है।’* वे कहते हैं – ***वहां 6 दिन एक बाढ़-सी आ गई थी और हमने अपने आपको खूब पकड़े रखा कि कहीं बह न जाएँ, पर बह ही गए।***

काकाजी एक सेन्टेन्स कहते थे – ***भावना को हाथ-पैर आते हैं।*** मतलब हमें तो सिर्फ सोचना ही है – बड़े संत के कहने पर ‘हाँ’ ही करनी है; बाकी सब सॅटिंग वे कर लेते हैं। मतलब उसमें डाइनेमिज़म आ जाता है और हमारी भावना वर्क करने लगती है। **काकाजी** शुरुआत में कहते थे – ***भावना को हाथ-पैर आते हैं***; फिर बाद में 1984 से कहने लगे थे – ***भावना को पंख आते हैं।*** अर्थात् चल कर – तुर कर जाएँ, उसके बजाय उड़ कर जाएँ तो जल्दी पहुंच ही जाते हैं। फिर एक बार दिवाली के मॅसेज में लिखवाया था – ***प्रगट के संबंध से भावना में पंख आते हैं।*** अपने यहां ऐसे संत के माध्यम से ‘प्रगट प्रभु’ का संबंध है। इसलिए यह इमीडियेट वर्केबल हो जाता है, इन्सटन्ट वर्किंग होती है। **यह एक पूरा सायन्स है।** आपने सुना होगा – मसूरी में आख़िर दिन गौरव ने एक बात की थी और… सब देखते भी थे कि हम 6 दिन मसूरी रहे, तब इन्होंने होटल के काम पर कोई ध्यान नहीं दिया। वे सिर्फ हमारी अरेंजमेंट, हमारी डिमांड्स को पूरा करने वगैरह में ही लगे रहे थे। मतलब, हम में ही पूरे इन्वॉल्व हो गए थे। आख़िरी दिन फिर इन्होंने माँगा भी था – ***अभी जिस तरह आप लोगों के साथ इन्वॉल्व रहा हूँ, दिल्ली जाकर फिर मैं अपने कारोबार, अपने व्यवहार, अपने ढंग में खो न जाऊं और ऐसे ही आपके साथ इन्वॉल्व रहूं ऐसा आशीर्वाद देना।*** इन्होंने दिल की सच्चाई

से यह भावना ही रखी, तो आज हम देख रहे हैं कि रात के ढाई बजे तक तो गौरव मंदिर में था। मुझे लगा कि अगर रात के ढाई बजे तक ये यहां रूका हुआ है, तो आज दस – सवा दस बजे उसका आना मुश्किल है। पर वह पापा को यह कह कर छोड़ आया कि आप तो लेट करा दोगे; ये गाड़ी है, आप आ जाना। इसे कहा जाए – भावना को पंख आते हैं; हमें दिल की सच्चाई से भावना ही रखनी है।

मैं आज आपको यह कहता हूँ कि दिवाली और नए साल के दिन हमें हमेशा ऐसा रहता है कि मंदिर जाएँ, आशीर्वाद लें और हम सुखी रहें। इसी भावना से हम हमेशा आते हैं। **काकाजी कहते थे कि प्रगट के उपासकों के लिए तो रोज़ दिवाली, रोज़ नया साल।** यह बात हमें खूब पसंद आती थी; आप लोगों ने भी ताली बजाई। मतलब सुखी रहना है, आनंद करना है – वो तो है ही। लेकिन जो भावना दिवाली व नए साल के दिन होती है, वही भावना रोज़ रखनी कि हमें मंदिर जाना है, संत से ऐसा संबंध करना है। अभी तक जो भी हुआ, भूल जाना है; नए सिरे से भगवान का होकर रहना है। यह भावना रोज़ रखेंगे, तो रोज़-रोज़ नए अनुभव होंगे।

हमें हमेशा अनुभव भी हुए हैं। यह बात हम कई बार सुन भी चुके हैं कि यदि हम 'हाँ' कर देंगे तो चाहे फिर हम इनकैपेबल क्यों न हों, प्रभु खुद अरेंज कर देते हैं। पहले भी मैंने एक बार यह बात की थी। **हमारे यहां प्रेमस्वामी हैं; स्वामिजी उन्हें कोई भी चीज करने को कहें – वे 'हाँ' कर देते हैं।** उन्हें थोड़ा बहुत आर्ट वर्क आता है। यह करीब पच्चीस-तीस साल पहले की बात कर रहा हूँ। एक बार स्वामिजी ने उन्हें रात के साढ़े आठ या नौ बजे के करीब कहा – *प्रेम, चार पेज का एक बर्थ-डॅ कार्ड बनाना है।* स्वामिजी ने भी इतनी दिलचस्पी से - इतनी डिटेल से बताया – *इस पेज पर ऐसा पिक्चर चाहिए, ये पेज पर ऐसा पिक्चर चाहिए, उस पेज पर ऐसे वगैरह - वगैरह। और... हॅन्ड पेंटिंग करनी थी।* स्वामिजी उन्हें समझाते रहे और वे सुन कर हाँ, हाँ, हाँ करते रहे। स्वामिजी जो चीजें समझा रहे थे, पहले तो वो समझनी मुश्किल थीं। वहीं बैठा हुआ मैं सोच रहा था – *ये क्या 'हाँ-हाँ' कर रहा है? ये कैसे करेगा?* पर, दो जने बातें कर रहे थे, सो मैं बीच में कुछ बोला नहीं। फिर जब स्वामिजी उन्हें सारा समझा कर चले गए, तब मैंने कहा – *प्रेमस्वरुप, तू सब 'हाँ ही हाँ' करता रहा, तू क्या ये कर पायेगा? कैसे करेगा? ये तेरे बस का है?* फिर मैंने मज़ाक भी की – *थोड़ा बहुत पेंटिंग आ गया, इसलिए तूने अपने आपको बहुत बड़ा आर्टिस्ट समझ ही लिया है।* प्रेमस्वरूप बोला – *ये सारी तुम्हारी सोच है। मेरी सोच यह है कि स्वामी ने कहा है, तो हमें 'हाँ' ही करनी है। बाकी करने वाले तो वे ही हैं।* मैंने सोचा – *देखते हैं, तेरे स्वामी क्या करते हैं?* स्वामी तो मेरे भी हैं; लेकिन देखो, संबंध में फरक पड़ता है। फिर मैं देख रहा था कि उन्होंने तो काग़ज़ इकट्ठे किए और ड्रॉइंग का सारा सामान वहां सब सॅट करके कुछ करने भी बैठ गए। मैं सोच रहा था – *ये करेगा कैसे? सुबह स्वामी को क्या जवाब देगा?* उस समय

हम पुराने मंदिर में रहते थे; एक गेट पर कुंडी लगा कर हम सोते थे। रात को तकरीबन ग्यारह बजे नॉक हुआ! हमने दरवाज़ा खुलवाया तो देखा कि एक बहुत अच्छा आर्टीस्ट – लेकिन तब उसकी कोई विशेष वैल्यू नहीं थी; मेरे ख्याल से झवेरी नाम था; कंगाल जैसा दाढ़ी वाला था – वो आया था!! उस समय ऐसे मोबाइल वगैरह भी नहीं थे। वर्ना, मेरा डाउटिंग माइंड यह भी सोचता कि प्रेमस्वामी ने फोन कर दिया होगा। उसे देखते ही मैं समझ गया कि स्वामिजी ने वाकई उनका काम कर दिया। वो इतना अच्छा आर्टिस्ट था कि सुबह भी नहीं होने देगा और एक-दो बजे तक पेंटिंग बना कर प्रेमस्वामी को दे देगा और हुआ भी ऐसा ही। तो देखो, प्रेमस्वामी ने तो सिर्फ 'हाँ' ही की थी। यह मेरे सामने घटित हुआ इंसीडन्स है। लेकिन **हमारा एक नेचर है; 'फरगेटफुलनेस' – हम भूल जाते हैं।** स्वामिजी ने जब प्रेमस्वामी का काम किया, तो यदि हम भी संत से ऐसा संबंध करेंगे, तो हमारा काम भी प्रभु करेंगे।

सो, नए साल पर नई कोई बात नहीं करनी है। हमें सुखी होना है, मंदिर में आते हैं – आशीर्वाद लेने। अब एक एक्नालेजमेंट भी हुई है। पहले आस्था से मानते थे, लेकिन अब हर कोई मन में विश्वासपूर्वक समझने भी लगा है कि **जिस फेमिली में अखंड प्रभुधारक संत का स्थान नहीं होगा, उसके लिए 'सुख' केवल कल्पना का ही विषय रहेगा।** मतलब **जिस फेमिली के सेंटर में ऐसे सच्चे संत का स्थान होगा, वो फेमिली सुखी, निश्चिंत और निर्भय रहेगी।**

वो संबंध हमें दृढ़ करना है। संबंध तो प्रभु ने हर एक को दिया हुआ है, पर वह हमें दृढ़ करना है। **पांचों पांडवों का कृष्ण से संबंध था; लेकिन जैसा संबंध अर्जुन ने किया था, वैसा दूसरे पांडवों का नहीं था।** अर्जुन जैसा निःसंशय रहा, वैसे युधिष्ठिर नहीं रहे। धर्मवान थे, ज्ञानी थे, सत्यनिष्ठ थे – सब कुछ था, लेकिन अर्जुन की भांति निश्चिंत नहीं रहे। जब भीष्म ने प्रतिज्ञा की – *कल या तो मैं नहीं, या अर्जुन नहीं;* कौरव तो खुश हो गए। सब जानते थे भीष्म के सामने किसी का मुकाबला नहीं हो सकता और अब जब भीष्म ने ठान ली है, तो वे करके ही रहेंगे। चारों पांडव भी चिंतित थे कि *भीष्म पितामह ने प्रतिज्ञा की है, सो कल तो हम अर्जुन को खो देंगे।* कृष्ण सूर्यास्त के बाद पांडवों की छावनी में गए। कृष्ण ने सोचा कि मैं अर्जुन को समझाऊंगा। उन्होंने देखा कि सब तो मुंह लटकाए बैठे हुए हैं, द्रौपदी रो रही है, पर कोने में अर्जुन सो रहा था। कृष्ण ने उसे जगाया। सोचा कि शायद इसे पता नहीं हो कि भीष्म ने क्या प्रतिज्ञा की है।

अर्जुन को जगाकर पूछा – *भीष्म की क्या प्रतिज्ञा है, तुझे ख्याल है?*

उसने आंख खोल कर कहा – *हाँ, प्रभु।*

तब कृष्ण कहते हैं – *फिर भी तू सोया पड़ा है!*

तब अर्जुन ने कहा – *क्योंकि आप जगे हुए हो।*

देखो, यह था प्रभु का भरोसा। हम ताली बजाते हैं, ख़ुश भी होते हैं। आप झूठी ताली बजाते हो, ऐसा नहीं है। दिमाग़ में वो चीज बैठी भी है, लेकिन ऐन मौके पर हम विचलित हो जाते हैं।

अब कल की बात – ओ.पी. अग्रवाल ने कहा कि गुरुजी कुछ विचलित लग रहे थे। वो बात अलग थी, ऐसी कोई चिंता वाली विचलितता नहीं थी। पर, मैं सोच रहा था कि ओहो, **काकाजी ने हम लोगों के अंदर क्या चीज भरी हुई है।** हमारे बॅप्स में एक सिद्धेश्वरस्वामी थे, जिन्होंने हमें संस्था से एक्स-कम्युनिकेट करने में मेईन रोल अदा किया था; वे एक्सपायर हो गए। मेरे दिल में पहले से ऐसा है – सिर्फ आप लोगों के साथ है या गुणातीत समाज में है – ऐसा भी नहीं; **हमारे अक्षरपुरुषोत्तम का-योगीजी महाराज से जुड़ा जो सारा समाज है, वो एक परिवार है। यह बात भीतर में बैठी ही हुई है; चाहे हम आपस में लड़े हों, झगड़े हों, मनमुटाव हुआ हो, एक-दूसरे से हमारी बोलचाल भी बंद हो; लेकिन 'वे भी अपने हैं'** – यह कैसे भूल सकते हैं? तो मुझे हुआ कि ओहो, सिद्धेश्वरस्वामी चले गए और आख़िर में भी हम उन्हें मिल नहीं पाए! बेशक, वे थे तो अपने ही। पर, यह कैसा बंधन है? इस बात पर मैं थोड़ा विचलित रहा, जो ओ.पी. ने नोट किया। **यह कुटुंबभाव हमें आपस में और संबंध वाले हर एक के साथ डेवलप करना है और वही हमारी 'सच्ची निष्ठा' है।** भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि और प्रीति – यही एक सत्संग है। संतों के प्रति-ऐसे भक्तों के प्रति – पूज्यभाव हो, यह तो भारत की संस्कृति है ही। मैं कहता हूँ न कि कहीं भी मंदिर, मस्ज़िद, गुरुद्वारा या गिरजाघर हमें दिखाई दे, तो हमारा मस्तक झुक जाता है। लेकिन **यह मंदिर हमारा है – ये भक्त लोग हमारे हैं – ऐसी आत्मीयता ही 'सच्चा सत्संग' है।**

आज यहां ये सब बैठे हुए हैं, हमारे हरिशंकरजी भी आएँ हैं। गेधरिंग हर जगह होती है, यहां छोटी होती होगी। पर एक बात नोट करना; यहां जितने बैठे हैं, इनमें 90 परसेंट से ऊपर एक-दूसरे को करीब से जानते-पहचानते होंगे, क्योंकि एक फॅमिली बैठी हुई है। मुश्किल से 10 परसेंट ऐसे होंगे, जो नए आए हैं। अगले साल वे भी इतने घुल-मिल जाएँगे। **अन्य जगह यह नहीं मिल पाएगा।** इसकी वजह यह है कि ऐसे गुणातीत-ब्रह्मस्वरूप संतों की अखंडित परंपरा – एक स्वामिनारायण ने ही रखी है। सुखी होना हो तो ऐसे संत के साथ संबंध कर लें। ऐसे संत के साथ हमारा संबंध हुआ हो और संत शरीर छोड़ भी दें, पर हम निराधार नहीं रहेंगे। उसके बाद ऐसी ही विभूति, ऐसी ही शक्ति-सामर्थी, ऐसी ही आत्मीयता, ऐसा ही प्रेम ऐसे संत के द्वारा भगवान मौजूद रखते, रखते और रखते ही हैं। **यह बात किसी और जगह नहीं मिलेगी।** वर्ना, एक बिजली प्रज्ज्वलित हुई और प्रकाश खत्म हो जाता है। पर, **गुणातीत संतों की एक अखंडित परंपरा में हमें स्थान मिला है, इससे बड़ा कोई सौभाग्य नहीं हो सकता।** बस, **इस बात की गहराई को समझ कर, ऐसे संत के साथ हमारा संबंध आत्मीयता से – एक कुटुंबभावना से दृढ़ होता रहे – यही आज के दिन प्रार्थना।** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

– प.पू. गुरुजी

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

* बड़े संत में दिव्यभाव रखेंगे तो हमें व्रत, तप, योग, दान जैसे साधन नहीं करने पड़ेंगे।
यह बात **काकाजी** से मुझे मिली है। वे कहा करते थे –
मुफ्त में, मौज में ! माला भी नहीं फिरानी पड़े!!
स्वभाव टालने के लिए हमें प्रयत्न करना पड़ता है, पर, यदि संत में दिव्यभाव रखें तो स्वभाव खड़ा ही नहीं रहेगा। जैसे पुलिस को देखकर चोर खड़ा नहीं रहता – वैसे ही।
हम इस बात का भरोसा करें और लग पड़ें।

* भगवान और भगवान के भक्त का गुण गाने में ही शांति है। 'फलाना ऐसा, फलाना वैसा' – वह तो भीतर में परेशानी खड़ी कर देगा।
गुण ही देखना है ; अवगुण नज़र आएँगे, लेकिन हमें देखने नहीं हैं। उसका हमें कोई काम नहीं है, अगर हमें अपना सुधार करना हो तो।
पर, कइयों को शौक होता है अपना ही बिगाड़ना – मुबारक हो उन्हें।

* **कृष्णजी अदाश्री** ने एक बात की थी–
नाने से हो नाना रहिए, जैसे नानी दूब;
घास फिस सब उड़ गया, फूस खूब की खूब।

* हमें कहीं ऐसा लगे कि कोई 'पंच वर्तमान' में यानि – नियम-मर्यादा में नहीं रहता है, तो हम उसकी संगत में न रहें, बस। उसकी चर्चा में भी हम न जाएँ। हाँ, उसके संग बैठकर अपना भी बिगड़े, ऐसा नहीं करना।

* भगवान की भक्ति करने से बेहतर कोई बात नहीं है। जो अकलमंद है, उसे ये बात समझ आएगी। बाकी, जो गोबरगणेश जैसा होगा, वो नहीं समझेगा।

* हमारे लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है ? हम जिस रास्ते चले हैं ; उससे बर्बाद होंगे या आबाद ? – इतना समझने की अक्ल तो होनी ही चाहिए। एक बात हमेशा समझकर रखें कि –
जो मन के संग चलेगा, वो बर्बाद होगा और जो संत के संग चलेगा, वो आबाद !

* कइयों के मन में होता है कि हम संत के चहेते बन जाएँ। पर, इस हेतु उनके भक्तों से एकता रखें और उनके चहेते बनें।

* 'निर्दोषबुद्धि' – सर्वोपरि कायदा है। **योगीजी महाराज** कहते थे – ***'अभाव – अवगुण का रास्ता बंद, स्टॉप-बंद।'***

* भगवान और संत के प्रति हम जितनी ऊंची भावना रखेंगे, उतनी ऊंची भावना हमारे लिए हो जाएगी। **यह भी एक इक्वेशन है।**
हमारे अंदर चाहे कैसे भी दोष हों – वचनामृत में तो लिखा है कि –
कुत्ते जैसा कामी हो, पर भगवान और अतिशय बड़े संत को निर्दोष समझे, तो वो अतिशय निर्दोष हो जाएगा।
हम निर्वासनिक नहीं होते, इसका मतलब कि हमारे मन में बड़े संत के प्रति निर्दोषभाव नहीं है। हम बोलते नहीं हैं, लेकिन भीतर में उनके प्रति खुन्नक या अरुचि का भाव है। अरुचि नहीं भी होगी, तो – 'यह ठीक नहीं करते, ऐसा करना चाहिए' – मन में ऐसा **'मायिकभाव'** रहता होगा।

* ये बातें मोक्ष की चाबी हैं। ऐसे गुरु मिलें, तो ऐसी चाबियाँ हमें बता दें। वर्ना तो पराशर आदि ऋषियों ने कैसी तपस्या की, लेकिन कोई एड्वांसमेन्ट नहीं...
* सत्संग की व्याख्या यही है कि सत्पुरुष में निर्दोषबुद्धि हो जाए! **संत के साथ निर्दोषभाव – दिव्यभाव से जुड़ जाएँ, वही सत्संग!**
ऐसा सत्संग 'एकांतिक सत्पुरुष' कराते हैं।
इसलिए प्रत्येक जगह – जहां भगवान का स्वरूप होगा, वहां एकांतिक भक्त जरूर होगा। उसकी संगत से हमें भगवान के स्वरूप के साथ सही प्रकार से जुड़ने का तरीका मिल सकता है। जैसे बापा भगवान के स्वरूप थे, तो काकाजी-पप्पाजी ने ऐसे एकांतिक सत्पुरुष का काम किया और सबको बापा में जोड़ा।
* संप्रदाय वालों को – 'अक्षर' की एवं ब्रह्मस्वरूप संतों की जीवंत परंपरा द्वारा भगवान के इस भूतल पर सदैव प्रगट रहने की – 'अक्षरपुरुषोत्तम संस्था' की बात पचती नहीं-जँचती नहीं है। संस्था को – '**गुणातीतभाव में जो-जो रहे, उन सब में** परब्रह्म तत्त्व रहता है' – यह काकाजी की बात पचती नहीं-जँचती नहीं है।
पर, एक बात समझनी पड़ेगी कि भले ही हमें आज एक-दूसरे की बात नहीं जँचती, लेकिन **प.पू. बापा** ने कहा है कि–
5, 25, 30, 50, 100 वर्ष के बाद सब एक हो जाने वाला है।
तो फिर हम, जिन्हें ऐसा कोई ज्ञानभेद या मतभेद नहीं है, ऐसे हम क्यों अलगाव रखें? हम 'गुणातीत समाज' के जो एक जुट हैं – वो तो एक रहें। **वर्ना, सोचना पड़े कि क्या अपने आपको प्रोजेक्ट करने की हमारी कोई दबी हुई मंसा है।**
बापा ने कैसी बात की –
तापी और नर्मदा में पूर आया-बाढ़ आई, तब दोनों एक हो गईं।
तो, ऐसी बाढ़ आएगी कि सबको एक हो जाना पड़ेगा। **काकाजी** तो कितने सालों पहले बोले थे – *जो संकुचितता रखेगा, उसे समाज खाबोचिया की तरह फैंक देगा।* समाज उसकी धज्जियाँ उड़ा देगा।
बापा ने दूसरी एक **मर्म की** बात की –
*ये जो एकता होगी, उसे देखने के लिए **आप** नहीं होंगे।*
'**आप**' कह कर मर्म खोल दिया कि *आप सबका तो देहांत हो जाएगा, पर **मैं तो 'चिरंजीव' हूँ!***
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने भी तो यह बात कही थी।
यहाँ हम यह समझना न चूकें कि ये सारी बातें बापा ने हमारे लिए भी कही हैं कि आप ऐसा कोई अलगाव नहीं रखना। बाकी सब एक हो ही जाने वाले हैं, वहाँ तुम तुम्हारा अलग लेकर कहां बैठोगे? सो, अभी हम तो एकता रख ही रखें।
* '**शुद्धभाव से सत्संग**' यानि? – इस संत के रूप में हमें महाराज ही मिले हैं; धाम में जो हैं, वे ये ही हैं – ऐसा मानकर उनके साथ जुड़ जाएँ, वो शुद्धभाव।
ऐसे शुद्धभाव से सत्संग करेंगे, तो हमारी हर प्रकार से अपने आप तरक्की होगी।
* दूसरों की सेवा 'भगवान की दृष्टि' से करनी और अपनी तरफ 'साधु की दृष्टि' रखनी। अपनी

सेवा दूसरों को नहीं सौंपनी। अपने कपड़े, अपने बिस्तर इत्यादि हमें ख़ुद को उठा लेने चाहिएँ।

* गुणातीतानंदस्वामी ने दिमाग़ में न बैठें ऐसी बातें की हैं। करोड़ों से कम कोई बात ही नहीं की है। कोटि व्रत, कोटि तप, कोटि दान, कोटि यज्ञ... अरे ! कल बोर्ड पढ़ा, तब से मन में ये हो गया कि इतनी जल्दी एकादशी आ गई ! तो, कोटि व्रत की तो बात ही कहां ?
* दूसरों की सेवा की बात तो बाद में रखें। पर, हम अपनी ही सेवा करें तो भी बहुत है। जैसे नहाने जाएँ और नहा-धोकर बाल्टी वगैरह ठीक-ठाक रख कर आएँ। साबुन पानी में पड़ा हुआ न रहे। सुबह उठें तब अपना बिस्तर तो उठा कर ले जाएँ।
* जैसे-जैसे व्यवहार बढ़ता है, जाहो-जलाली बढ़ती है, मेरा-तेरा शुरू हो जाता है। लेकिन, कभी किसी की झंझट की बात हमें नहीं सुननी है। अगर किसी ने गल्ती भी की है, तो महाराज जाने और वो जाने। अगर कोई हमसे ऐसी बात करने के लिए आए कि *मंदिर में ऐसा चल रहा है-वैसा चल रहा है*; तो कह देना– *अपने मंदिर के बारे में गलत बात मत कर।* हमारी फेमिली के बारे कोई कुछ गलत कहने आता है, तो क्या हम सुनते हैं ? बस ऐसा ही करना है। वो झंझट हमारे अंदर घुसे, इससे अच्छा है कि उसमें हम जाएँ ही नहीं।
* **सुहृद्भाव बढ़ेगा, महिमा जानेंगे तो अपने भीतर के ज्ञान तंतु बढ़ जाएँगे।** ये सारे आशीर्वाद हैं।

  जिस भाव से हम काकाजी-पप्पाजी जैसे बड़े संत की सेवा करते हैं, उसी भाव से आख़िरी पंक्ति के – जिसका सत्संग में कोई क्लास ही न हो – उसकी भी सेवा करें। पर, हम तो मानते हैं कि ये सारी बातें तो पुस्तक में छापने के लिए होती हैं। **ऐसी सोच से हम डब्बे के डब्बे ही रहेंगे।**

  हर एक को 'एकांतिक' ही समझना। आज नहीं तो कल वह होने वाला ही है। फिर अभी से ही क्यों न मानने लगें, क्योंकि गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा हुआ है कि सबको ब्रह्मरूप करना है। जो उनकी नज़र में आ गए हैं, उन्हें वे छोड़ने वाले हैं ही नहीं।
* जब तक सुहृद्भाव नहीं है, तब तक भीतर में माया का लोचा-गांठ है और तब तक अधजली लकड़ी के जैसे सुलगते रहेंगे। गुणातीत समाज का जो भी है – वो स्वामी का स्वरूप है, काकाजी का स्वरूप है, पप्पाजी का स्वरूप है। मतलब सबके साथ सुहृद्भाव रख लेना है। यह मेरा – वह तुम्हारा ऐसा रखना ही नहीं है।
* सुहृद्भाव, मित्रभाव, कुटुंबभाव – अगर समझ में आ जाए, तो खटपट नहीं होगी, कानाफूसी नहीं होगी, इधर की बात उधर, उधर की बात इधर – यह सब नहीं होगा। इतना करेंगे, तो जीव सुखी हो जाएगा।
* 2012 के फंक्शन में हमने देखा कि मुट्ठीभर सेवकों ने एकता से सेवा की, तो 10-10 जनों ने 500-500 जनों का काम किया।
* मन के साथ कभी कॉम्प्रोमाइज़ नहीं करना। हम मन के साथ समझौता करके बैठ जाते हैं।
* गर्मी हो, कोई आया हो तो ठंडा पानी दो। संतों को हरिभक्तों की अपेक्षा रखनी चाहिए। इसी पर अपना – स्वामिनारायण का सारा व्यवहार चला हुआ है। संतों को हमेशा भक्तों को संभालने की भावना रखनी चाहिए। शाम को उनकी राह देखें।

घर में सब कैसे राह देखते हैं? लेट हो जाते हैं, तो पूछते हैं कि आज कैसे लेट हो गए? ऐसे राह देखनी चाहिए।

❋ प.पू. बापा कहते – *अगर संप-सुहृद्‌भाव रखोगे, तो मैं मान लूंगा कि तुमने करोड़ रुपए की सेवा की।* कितनी बड़ी बात होगी यह – विचार करना।

❋ शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी दिव्यदृष्टि रख कर – बिना भेदभाव रख कर जो जीए हुए हैं, वैसे हमें जीना है।

❋ हमें गुणातीत संत मिले हैं और अगर हम गुणातीतभाव को नहीं पाए, तो गुनहगार कहलाएँगे। क्योंकि इन्होंने यह आसान किया है। कोई साधना नहीं करनी है। 'स्वामी मेरे, मैं स्वामी का' बस!

❋ स्वामी ने चार बातें बताई हैं। आज्ञा, उपासना, एकांतिक में प्रीति और भगवदी में सुहृद्‌भाव। इनमें **'सुहृद्‌भाव'** को टॉप कहा हुआ है। सुहृद्‌भाव जीव का जीवन है।

❋ अगर हम सुहृद्‌भाव रखेंगे, तो आज्ञा, उपासना और एकांतिक में प्रीति तीनों आ जाएँगे। हमें इसी लाइन पर चलना है। इसके सिवा कुछ करना ही नहीं है।

❋ **गुरुहरि योगीजी महाराज** कहते – ***एकता रखना। हमारी मेहनत-हमारा परिश्रम हमारे सिर पर न पड़े ऐसा करना।***

अर्थात्, हमारी मेहनत पानी में जाए, ऐसा नहीं करना।

यूँ काकाजी-पप्पाजी ने इतना अपमान सह कर, गालियां खाकर, बापा का स्थूल संबंध भी गवाँ कर जो ये **'गुणातीत समाज'** हमारे लिए खड़ा कर दिया, उनकी इस मेहनत पर हम पानी न फेर दें।

❋ कैसी टॅक्नीकल बात की है **बापा** ने –

तुम्हारा मन यहां (मुझ में) ठहरता है, उसकी वजह यह है कि हमने शास्त्रीजी महाराज को राजी किया है। ये लिटमस टेस्ट बता दिया। बापा कहते हैं –

हमने मनमानी नहीं की है, इसी कारण शास्त्रीजी महाराज हम पर राजी हुए हैं और इसीलिए तुम लोगों को मुझ से शांति होती है, हल मिलता है, समाधान मिलता है।

❋ धाम, धामी और मुक्त ही सत्य हैं; बाकी कुछ है ही नहीं – यही है सत्-असत् का विवेक!

❋ महाराज और गुणातीत के सिवा किसी का प्रभाव हम पर नहीं पड़ना चाहिए।

शास्त्रीजी महाराज का आसरा यानि – महाराज और स्वामी जिनके द्वारा प्रगट हैं ऐसे संत का आसरा करेंगे, तो चाहे कितना ही बड़ा दुःख आएगा, संत हम पर हावी होने नहीं देंगे। यह भरोसा तो हमें रखना ही पड़ेगा। **हरिप्रसादस्वामिजी** कहते हैं – ***भगवान का एक 'स्वभाव' है – रक्षा करना।*** इनका एक स्वभाव है – तुम कैसे भी हो, मैं तुम्हारी रक्षा करता रहूंगा। **पर, हम उनके होने चाहिए।**

❋ संबंध वाले किसी से भी मन का अलगाव नहीं रखना; सब अपने ही हैं। उनसे संबंध में गांठ-बल नहीं पड़ने देना। बल पड़ जाए तो भयंकर दुःख है। महाराज को आंटी (ग्रंथि) नहीं जँचती, सुहृद्‌भाव जँचता है।

*['योगीवाणी' के मुद्दे समझाते हुए
प.पू. गुरुजी द्वारा की गई बातों में से...]*

✡✡✡

भजन – 1

(राग– छोड़ो कल की बातें....)

छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी,
गुणातीत समाज की लिखें हम, मिल कर फिर से कहानी...

छोड़ें पुराना ढाँचा, गुरु ढाँचे में ढल जाएँ
ब्राह्मीस्थिति तब पाकर हम, सहज उड़ते हो जाएँ,
तो हैं काकाजी के, हम पप्पाजी के
बनें काकाजी के, गुणातीत समाज के।

आम का पेड़ लगाएँ और जो आम न पाएँ
किया परिश्रम उस पर वो निष्फल हो जाए,
इसी तरह गुणातीत संत का जोग हो जाए,
और गुणातीतभाव अगर ना प्रगटा पाएँ
मौका सुनहरा अब न गवाँए, जागे तभी सवेरा,
तो हैं काकाजी के , हम पप्पाजी के
बनें काकाजी के, गुणातीत समाज के।
छोड़ें पुराना ढाँचा, गुरु ढाँचे में ढल जाएँ...

मुक्तों के स्वभाव जो अपने दिल से जँचाए,
तो स्वभाव अपने गुरुकृपा से सब टल जाएँ,
मुक्तों में जो दोष दिखें उन्हें अपना मानें,
मन-बुद्धि को शत्रु या फिर मित्र बना लें,
छलनी रखें, गुरु राजी होंगे, तो ही कदम बढ़ाएँ,
तो हैं काकाजी के , हम पप्पाजी के
बनें काकाजी के, गुणातीत समाज के।
छोड़ें पुराना ढाँचा, गुरु ढाँचे में ढल जाएँ...

शूरवीरता 'काका' सी भीतर अपनाएँ,
इंद्रियों-अंतःकरण के भावों से पर हो जाएँ,
'पप्पा' जैसा दासत्व अंतर में बस जाए,
मुक्त हैं सिर का ताज़ ये बात सहज हो जाए...
हीरक जयंती के मौके पर, शाश्वत् सुख हम पाएँ...
तो हैं काकाजी के , हम पप्पाजी के
बनें काकाजी के, गुणातीत समाज के।

छोड़ें पुराना ढाँचा, गुरु ढाँचे में ढल जाएँ
ब्राह्मीस्थिति तब पाकर हम, सहज उड़ते ही जाएँ,
तो हैं काकाजी के , हम पप्पाजी के
बनें काकाजी के, गुणातीत समाज के। -3

✡✡✡

भजन – 2

(राग– नयनने बंध राखीने...)

कल्पना थी कलाकार की, प्रभु की मूरत न थी,
कथाज्ञान बहुत सुना मगर, मन में सूरत न थी,
गुरुजी की निश्रा पाई प्रभु , प्रगट मिल गए,
प्रभु ढूँढने की अब हमें कोई जरूरत नहीं।

आपके सान्निध्य में एहसास गुरुजी प्रभु का पाया है, -2
माहात्म्य, गाएँ हम जितना, लगे है कम ही गाया है।
आपके सान्निध्य में गुरुजी...

छबि दिखती गुणातीत सी, है वर्तन भी गुणातीत सा, -2
सहज सेवक बन कर जीते, उसमें सामर्थ्य छिपाया है। -2
माहात्म्य गाएँ हम जितना, लगे है कम ही गाया है।
आपके सान्निध्य में गुरुजी...

काकाजी की तरह दिल में मुक्तों को ही बसाए हो,
कभी दिलबर बने... हमसफ़र बने... कभी राहबर बने...
काकाजी की तरह दिल में मुक्तों को ही बसाए हो,
धाम, धामी, मुक्तों में ही जगत तेरा समाया है। -2
माहात्म्य गाएँ हम जितना, लगे है कम ही गाया है।
आपके सान्निध्य में गुरुजी...

काकाजी ने 'निज़ी' कह कर सारी जिम्मेदारी ले ली, -2
कह के 'बेटा' तुम्हें अपना, पप्पाजी ने नवाज़ा है। -2
माहात्म्य गाएँ हम जितना, लगे है कम ही गाया है।
आपके सान्निध्य में गुरुजी...

देख संबंध काकाश्री का, प्रेम निरपेक्ष बरसाते, -2
सर्वदेशीयता रख सुहृद्भाव का कलश चढ़ाया है। -2
माहात्म्य गाएँ हम जितना, लगे है कम ही गाया है।
आपके सान्निध्य में गुरुजी...

सिद्धि और स्थिति पाई, उसे गुरुकृपा माना, -2
हीरक आनंदोत्सव में तेरा अमृतपर्व समाया है। -2
माहात्म्य गाएँ हम जितना, लगे है कम ही गाया है।
आपके सान्निध्य में...

आपके सान्निध्य में एहसास गुरुजी प्रभु का पाया है,
माहात्म्य गाएँ हम जितना, लगे है कम ही गाया है।
आपके सान्निध्य में गुरुजी...

(राग - आने से उसके आए बहार...)

सौभाग्य से तेरा संबंध मिला,
गुणातीत कुनबे में रहना मिला;
तेरे टोटल बन के रहें, तो हो पूर्णाहुति,
करवा दो इसी जन्म में, हमारी पूर्णाहुति....

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	10.12.'12,	सोमवार	–	एकादशी – व्रत
(2)	दि.	16.12.'12,	रविवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(3)	दि.	24.12.'12,	सोमवार	–	एकादशी – व्रत
(4)	**दि.**	**31.12.'12,**	**सोमवार**	**–**	**2013 – नए वर्ष के उपलक्ष्य में दिल्ली – ताड़देव मंदिर में रात्रि 9:45 से 'मध्यरात्रि महापूजा'**
(5)	दि.	8.1.2013,	मंगलवार	–	एकादशी – व्रत
(6)	दि.	13.1.'13,	रविवार	–	लोहड़ी
(7)	दि.	14.1.'13,	सोमवार	–	मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(8)	दि.	22.1.'13,	मंगलवार	–	एकादशी – व्रत
(9)	**दि.**	**27.1.'13,**	**रविवार**	**–**	**पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन**

(Air Mail)
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052